REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2021

भारतीय राष्ट्रवाद की चुनौती के रूप में सम्प्रदायवाद
' एक समाज शास्त्रीय विवेचन'

मदन मोहन मालवीय[1] , डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय[2]
[1]पी.जी. कॉलेज, भाटपार रानी, देवरिया।
(दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर उ.प्र. से सम्बद्ध)
[2]असीसटेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
(समाज शास्त्र विभाग)

राष्ट्रवाद एक प्रकार की सामूहिक भावना है जिसमें राष्ट्र की सर्वोपरिता का बोध होता है। इसमें विभिन्न प्रकार की एकताएं एवं समानताएं है जिनका सम्बन्ध मुख्य रूप से राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति या विकास से है। भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा प्राचीनकाल से चली आ रही है किन्तु आधुनिक राष्ट्रवाद की परिकल्पना लगभग 150 वर्षों तक अंग्रेजों के शासन के दौरान देखने को मिलती है। इस काल खण्ड में भारतीय समाज में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चेतना को जन्म दिया है। शैक्षणिक तथा राजनीतिक चेतना ने देश के अनेक भागों में व्याप्त मांगों को स्थगित रखते हुए एक बड़ा लक्ष्य निर्धारित किया जिसकी प्राप्ति स्तंत्रतता के रूप में हुई।

भारत विभिन्न धर्मो, सम्प्रदायों, विचारधाराओं तथा अनेक परम्पराओं का देश रहा है। यह विश्व के प्रमुख धर्मों में चार का उद्भव एवं विकास का स्थल रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य कालखण्डों में बाहरी धर्मों के लोगो को भी इस भूमि ने आश्रय दिया। चाहे वे याचक के रूप में आए हो, या आकांता के रूप में। इन सभी धर्मो एवं सम्प्रदायों के साझी संस्कृति ने भारत को एक बहुलवादी संस्कृति के रूप में पहचान बनाई। इनमें से किसी धार्मिक समूह द्वारा सत्ता के साथ स्वयं की श्रेष्ठता तथा दूसरे समूह के प्रति हीनता का भाव सम्प्रदायवाद को एक समस्या के रूप में जन्म दिया। जिससे राष्ट्रीयता को समय समय पर खंडित करने का कार्य किया। सम्प्रदायवाद वह भावना है जिसके अंतर्गत एक धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी अपने हितों को पूरा करने के लिए अन्य धार्मिक या सम्प्रदाय के विरूद्ध अपने को संगठित करते है एवं अपनी सुविधानुसार उन्हें भड़काते है और हिंसा का सहारा भी लेते हैं।

सम्प्रदाय वाद एक ऐसी संकीर्ण मनोवृत्ति है जिसके अन्तर्गत एक विशेष धर्म अथवा सम्प्रदाय के अनुयायी अपने धार्मिक तथा राजनीतिक स्वार्थों को पूरा करने के लिए अपने समूह को अन्य समूहों के विरूद्ध संगठित करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें उग्र प्रदर्शनों, उत्तेजक भाषणों तथा हिंसा के लिए प्रेरित करते हैं। श्री कृष्णदत्त का विचार है कि ''सम्प्रदाय का अर्थ है, मेरा सम्प्रदाय, मेरा पंथ, मेरा मत ही सबसे अच्छा है। उसी का महत्व सर्वोपरि होना चाहिये। उसी की सत्ता मानी जानी चाहिये। अन्य सम्प्रदाय हेयया दोयम है, उन्हें या तो पूर्णतः समाप्त कर दिया जाना चाहिये या यदि वे रहें भी तो मेरे अधीन होकर रहें। मेरे आदर्शों का पालन करें तथा मेरी मर्जी पर आश्रित रहें।'' वास्तव में अपने धार्मिक सम्प्रदाय से भिन्न अन्य सम्प्रदाय अथवा सम्प्रदायों के प्रति उदासीनता, उपेक्षा, घृणा, विरोध और आक्रमकता की भावना साम्प्रदायिकता है, जिसका आधार वह

वास्तविक या काल्पनिक भय या आशंका है कि अभुक सम्प्रदाय हमारे अपने सम्प्रदाय एवं संस्कृति को नष्ट कर देने या हमें जानमाल की क्षति पहुँचाने के लिए कटिवद्ध हैं।

वर्तमान में सम्प्रदायवाद एक विघटनकारी प्रवृत्ति है जो भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक बड़ी चुनौती है। यद्यपि यह एक पुरानी समस्या है। मुगलकाल में सम्प्रदाय के आधार पर किए गए निर्णयों एवं नीतियों ने इसकी जड़ को सुदृढ़ बनाया। इसको पल्लवित एवं पुष्पित करने का कार्य अंग्रेजों द्वारा किया गया। जिनके अपने निहित स्वार्थ थे। अंग्रेज शासकों ने विभेद द्वारा शासन करने की नीति को अपनाया। इस नीति के अंतर्गत यह सदैव प्रयास किया गया कि हिन्दू एवं मुसलमान कभी एक मंच पर न आए। इसके पीछे उनके राजनीतिक हित थे। अपनी शासन सत्ता को दीर्घकालिक बनाये रखने के लिए उन्होने जान बूझ कर एक दूसरे को वैचारिक, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लड़ाते रहे और इस प्रकार उन्होने यहाँ के स्वार्थी समूहों के साथ मिलकर हिन्दूओं एवं मुस्लिम लोगो के बीच एक न भरने वाली खाई को पैदा किया। इन दो विरोधी ध्रुवों का प्रतिनिधित्व मुस्लिम लीग एवं हिन्दू महासभा ने किया। इन दोनों दलों के लोगों ने अपने राजीनीतिक हितों की पूर्ति के लिए एक दूसरे के प्रति हिंसा भाव भरते रहे। कालान्तर में सम्प्रदाय के आधार पर दो राष्ट्रों की वकालत होने लगी जिसका लाभ तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने उठाया और पाकिस्तान एक नये राष्ट्र के रूप में उत्पन्न हुआ। जिसकी कीमत साम्प्रदायिक हिंसा में लोगों ने अपनी जान गवा कर दी।

स्वतंत्रता के पश्चात सम्प्रदायवाद का पोषण राजनीतिक दलों द्वारा प्रारंभ किया गया। जिसे वोट बैंक की राजनीति कहा गया। सम्प्रदायवाद की भावना का व्यवहारिक प्रयोग इन राजनीतिक दलों द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए समय–समय पर किया जाता रहा है। जिसका परिणाम बंगाल, अलीगढ़, मऊ, सहारनपुर, के दंगों के रूप में दिखलाई पड़ता है। इसके कारण दोनों समुदायों में एक दूसरे के प्रति अविश्वास, हिंसा, आक्रामकता का भाव दिखलाई पड़ता है। साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में धार्मिक कट्टरता, एक बड़ा एवं समकालीन कारक है। धर्मो से जुड़े, धर्म गुरूओं के व्याख्यान,उनकी श्रेष्ठता पूर्ण व्याख्या दूसरे धर्मो के प्रति उपेक्षात्मक भाव, धार्मिक प्रतीक चिन्हों का गलत प्रयोग आदि ऐसी कियाएँ है, जो दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को चुभती है। इस अवसर का लाभ दूसरे धर्म से सम्बंधित स्वार्थ समूहों द्वारा उठाया जाता है और एक समूह दूसरे समूह के प्रति हिंसाका भाव प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक भिन्नता जैसे रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान, त्यौहार आदि को लेकर भी झगड़े होते हैं। जिससे एक दूसरे सम्प्रदाय के प्रति अविश्वास पनपता है।

सम्प्रदायवाद को बढ़ाने में आंतरिक कारकों के साथ बाहरी कारक भी सहयोग करते हैं। पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान द्वारा भारतीय समाज में होने वाले धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यों के प्रति एक सोची समझी रणनीति के तहत प्रायोजित नकारात्मक खबरें प्रचारित की जाती है। जैसे अल्पसंख्यकों के अधिकारों को दबाया जा रहा है या उनके साथ उचित व्यवहार नही किया जा रहा है। इस प्रकार की घटनाएं अनायास बहुसंख्यक समुदाय को एक दूसरे समुदाय के प्रति संकालू बना दे रहा है।

साम्प्रदायिक संगठनों, जो अपने सम्प्रदाय के हितों का दावा करते हैं, उनके द्वारा उठाए गए गैर जरूरी मुद्दे भी साम्प्रदायिक सद्भाव को नष्ट करते हैं एवं राष्ट्रीयता पर चोट पहुचातें हैं। हाल ही में कछ घटनाओं पर ऐसे संगठनों के गतिविधियों ने जनमानस को चिंतिंत किया, काश्मीर में अनुच्छेद 370 एवं 35 ए, के हटने पर जिस प्रकार से इसे साम्प्रदायिक रंग देने का प्रयास किया गया, वह निहायत गैर जिम्मेदाराना कार्य था। जम्मू काश्मीर की स्थिति एक राज्य में द्विराष्ट्र की व्यवस्था थी। अनुच्छेद 370 हटने के बाद एक राज्य एक राष्ट्र की परिकल्पना पूर्ण हुई। इस निर्णय पर पड़ोसी राष्ट्र द्वारा इसे साम्प्रदायिक रंग देने का प्रयास किया। स्थानीय स्वार्थी समूह एवं कुछ राजनीतिक दलों एवं व्यक्तियों ने इस भावना को भड़काने का प्रयास किया जिससे बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक समुदाय के बीच एक अविश्वास की स्थिति बनी।

अतीत की कुछ घटनाएं विशेषकर धार्मिक आस्था एवं प्रतीक चिन्हों तथा स्थानों को लेकर हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच वैचारिक खाई को बढ़ाती है। जिसको लेकर दोनों समुदाय में हिंसक झड़प भी हुए हैं। ये झड़पे भविष्य के लिए उर्वरा का काम करती है और दोनों समुदाय के स्वार्थी तत्व इसको समय समय पर हवा देते रहते हैं। जिसमें एक बाबरी मस्जिद विवाद भी रहा है। 6 दिसम्बर की घटना को किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। क्यों कि इससे अल्पसंख्यकों में असुरक्षा का भाव, शासन के प्रति अविश्वास तथा संविधान की मर्यादा टूटी। आक्रोश व्यक्त करने के ढंग में भारतीय संविधान को फाड़ना, राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह झंडे को

जलाना, राष्ट्र को मुर्दाबाद घोषित करना, हिन्दू संगठनों द्वारा राष्ट्रीय व्यक्तित्व बापू को गाली देना, हत्यारें गोडसे को राष्ट्र भक्त कहना, ये सब ऐसी घटनाएं है, जो राष्ट्रीय एकता को चुनौती देते हैं।

21 वीं सदी के दूसरे दशक में एक खास प्रवृति दिखलाई पड़ रही है, जिसमें धर्म के आधार पर राजनीतिक मतों का ध्रुवीकरण हो रहा है। विशेषकर उत्तर प्रदेश जहां पर राष्ट्रीय एवं छोटे दल भी इस प्रयोग में पीछे नही हैं। इन दलों द्वारा लोकतंत्र की मर्यादा को तार–तार करते हुए सार्वजनिक मंचों से अप्रत्यक्ष धर्म की दुहाई देकर अपने उम्मीदवारों को विजयी बनाने की अपील की जाती है। दूसरे धर्म से भय दिखाकर अपने स्वार्थ को सिद्ध किया जाता है और इस खेल में भावनात्मक रूप जनता जुड़ते हुए मतों का प्रयोग भी करती है। ऐसी अपील एवं खबरों को बेलगाम न्यूज चैनलों, पेड न्यूज चैनलों द्वारा प्रचारित किया जाता है, जिसका प्रभाव पूरे धार्मिक समुदायों पर पड़ता है।

मीडिया के एक नए स्वरूप जिसे सोसल मीडिया कहा जा रहा है, जिससे किसी भी घटना, समाचार का तेजी से फैलाव हो रहा है। सकारात्मक प्रयोग के रूप में यह एक सशक्त माध्यम है, जो सरकार एवं राजनैतिक दलों के अनुचित व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। किन्तु इसका प्रयोग नकारात्मक रूपों में राजनीतीक दलों, स्वार्थी समूहों, सम्प्रदायिक संगठनों, धार्मिक कटटरवादियों द्वारा बखूबी किया जा रहा है। आज यह मीडिया फेंक, मनगढंत, झूठे समाचारों एवं घटनाओं से भरा पड़ा है। जिसके खबरों पर विश्वास कर के देश के विभिन्न भागों में दंगा अल्पसंख्यकों के प्रति हिंसा, अखलाक, जैसी घटनाएं घट रही हैं। यह सूचना का त्वरित माध्यम अफवाह की गति को कई गुना बढ़ा देता है।इसकी पुष्टि कोविड–19 के संदर्भ में किये गये एक वैश्विक अध्ययन से होती है।

सोसल मीडिया के द्वारा 'कोविड–19' के संदर्भ में प्रेषित, प्रचारित जानकारी एवं सूचनाओं के प्रमाणिकता के सम्बन्ध में 'प्रिवलेंस एवं सोर्स एनालिसिस ऑफ कोविड 19' नाम से एक अध्ययन 138 देशों में किया गया। स्टडी को सेज के इन्टरनेशनल फडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसियेशन एवं इन्सीट्यूट जर्नल में छापा गया है। इसमें कहा गया है कि इन सभी देशों में से भारत में 18.07 प्रतिशत भ्रामक जानकारियाँ शेयर की गई। इसके अलावा भारत उन चार देशों में सम्मिलित रहा जहाँ भ्रामक जानकारियों ने लोगों को सबसे अधिक प्रभावित किया। इसी सूची में दूसरे स्थान पर अमेरिका है। स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया के माध्यम से सबसे ज्यादा 84.94 प्रतिशत फर्जी जानकारियाँ दी जाती है। इसके अलावा सभी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की तुलना में अकेले फेसबुक पर ही 66.87 प्रतिशत फर्जी जानकारी साझा की गई।

देश के विभिन्न भागों में विशेष कर उत्तर भारत में राजस्थान से लेकर पश्चिम बंगाल तक एक ऐसी प्रवृति देखने को मिल रही है जिसमें धार्मिक प्रतीत चिन्हों के मारने एवं अपमान के नाम पर माबलिंचिंग की घटनाएं घट रही है। जिसमें कानून अपने हाथ में लेकर सम्बंधित व्यक्ति को भीड़ द्वारा पीट–पीट कर हत्या कर दी जाती है। ऐसी घटनाएं नागरिकों को सोचने के लिए बाध्य कर दे रही है। शासन प्रशासन से सम्बंधित पक्ष के लोगों का विश्वास उठता एवं अपने को असुरक्षित मानते हैं। इसके कारण राष्ट्रीय भावना को खतरा होता है। लोगो के बीच पारस्परिक तनाव होता है और कहीं कहीं पर हिंसा भी होती है। जिसमें मानव क्षति. सार्वजनिक जन–धन की हानि होती है। सांस्कृतिक एकीकरण में बाधा उत्पन्न होती है और अंततः राष्ट्रीयता के भावना को चोट पहुचती हैं।

उपर्युक्त के आलोक में यह आवश्यक हो जाता है कि सम्प्रदायवाद के जो आधार हैं, उसे कमजोर किया जाय। जो इसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं उनकी निगरानी की जाय। दोनों समुदाय के शीर्ष लोगों को एक मंच पर लाया जाय। जो अतिवादी हैं, उन पर त्वरित कानूनी कार्रवाई की जाए और जो साम्प्रदायिक घटनाओं के आरोपित हैं, उनके लिए विशेष न्यायालयों का निर्माण कर के शीघ्र निर्णय दिए जायें। बेलगाम इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सोशल मीडिया के लिए एक निश्चित संहिता लागू किया जाय। आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया, जाय जिससे सभ्य एवं जिम्मेदार भारत का निर्माण हो सके। यदि हम ऐसा कर पायें तो निश्चित तौर पर भारतीय राष्ट्रवाद को सुदृढ़ता प्रदान होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जी.के. अग्रवाल : सामाजिक विघटन ISBN : 978-93-5047-296-5
2. ए.आर.एन. श्रीवास्त : भारतीय सामाजिक समस्साएं (सम्पादित) शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद।

3. श्रीकृष्णदत्त भट्ट : सामाजिक विघटन एवं भारत
4. गुप्ता शर्मा : समाजशास्त्र साहित्य भवन पब्लिकेशन
5. राम आहूजा : सामाजिक समस्याएं रावत पब्लिकेशन, जयपुर
6. हिन्दुस्तान समाचार पत्र 15 सितम्बर 2021
7. Gandhi 'A Warrior of peace' ISBN : 978-93-85623-76-9
8. Dr. S.K. Pandey: Noakhali- ibidp Pase 189-203.